- प्रथम अध्याय -

“शेवडे का व्यक्तित्व एव कृतित्व”

प्रथम अध्याय

गोखले का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१] प्रस्तावना

२] जन्म

३] माता पिता

४] परिवार

५] शिक्षा

६] स्वधर्म के प्रति श्रद्धा

७] पत्रकारिता

८] आर्थिक स्थिति

९] राजनीतिक स्थिती

१०] साहित्य निर्मिती

११] मृत्यु

अध्याय - १

शेवडे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

महाराष्ट्र में रहनेवाले अनंत गोपाल शेवडे ये जाने माने हिंदी लेखक है। इनपर अधिक तर हिंदी भाषा का प्रभाव पडा क्योंकि इनके पिता सरकारी नौकरी में थे अत: जादह तर हिंदी प्रदेशोंमें तबादला होता था। जिसके कारण इनके मन पर हिंदी की अमिट छाप पडी थी। इन्होनें अपनी मातृभाषा मराठी छोडकर हिंदीमेंही लिखना प्रारंभ कर दिया। खास तौर पर उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, पत्रकारिता, आदि क्षेत्र में लेखन कार्य किया। और अपना नाम हिंदी क्षेत्र में रोशन किया।

जन्म -

ऐसे जाने माने लेखक का जन्म ८ सितम्बर सन् १९११ में मध्य प्रदेश के छिंदवाडा जिलेमें सौंसर नामक गाँव में हुआ। यह गाँव हिंदी मराठी भाषाओंसे घिरा हुआ है। अत: बचपन से ही इनको हिंदी और मराठी भाषा का ज्ञान होता रहा। प्रारम्भीक शिक्षा हिंदीमेंही हुअी। श्रावण मास में जन्म होने के कारण उनके घरवालों ने गणेश की कृपा मानी और उनका नाम अनंत रखा गया। अपने जन्मस्थल के बारे में वह स्वयंही कहते हैं कि -

"ऐसे स्थान पर जन्म दिलाकर भगवान ने मानों मुझे यह आदेश दिया है कि तू हिंदी और मराठी भाषाओं के बीच सेतु का काम कर। शेवडे जी मानते हैं कि, उनका कार्य केवळ हिंदी और मराठी के बीच नहीं, लेकिन भारत की, सभी भाषा भगिनियों के बीच स्नेह और

सद्भावना का सेतु मजबूत बनाने का है।"[1]

माता - पिता -

१९ वी सदी में अंग्रेजों का शासन था। इन अंग्रेजों के द्वारा तहसीलदारोंसे लेकर जिलाधिकारीयों तक भारतीय अधिकारी नियुक्त किये जाते थे। उनमें से गोपाल लक्ष्मण शेवडे भी एक थे। उन्होंने खण्डवा, होशंगाबाद, छिंदवाडा, जिलोमें नायब तहसीलदार के रूप में कार्य किया। ब्राम्हण परिवार में पलने के कारण वे आस्तिक थे। उनके मन में राष्ट्र के लिए प्रेम था। सन् १९२१ में असहयोग आन्दोलन की हवा बह रही थी। गांधीजी के विचारों से बुढ्ढों के साथ बच्चे, और नव युवक भी प्रभावित थे। तहसील में पकडे गये सत्याग्रहीयों को नायब तहसीलदार के सामने लाया जाता था। ऐसे ही एक सत्याग्रही बालक को उन्हें छ: महिने की कारावास की सजा देनी पडी। उन दिनो सरकारी नौकरी करना निषिध्द माना जाता था लेकिन गोपाल लक्ष्मण शेवडे मजबुरीसे नौकरी करते थे। अनंत गोपाल शेवडे को प्राइमरी स्कूल में तीन रुपये की छात्र वृत्ति मिलती थी। इसी के बल पर उन्होंने अपने पिताजी को नौकरी छोडने को कहा था। सन् १९२८ में जब शेवडे मैट्रिक की परिक्षा दे रहे थे तो अचानक हृदय गती रुक जाने से उनके पिता की मृत्यु हुई।

शेवडे की माँ का नाम रमाबाई था। वह नित्य पूजा-पाठ करती थी। राम, कृष्ण, विष्णु लक्ष्मी आदि देवताओं के साथ वह

१] डॉ. शंकर नागेश गुंजिकर -"अनंत गोपाल शेवडे और उनका साहित्य" पृष्ठ १/२.

गांधीजी को भी अपना दैवत मानती थी। शेवडे के पिता की मृत्यु के बाद वह अपना सारा परिवार लेकर नागपुर चली आयी, तब उनके पास पैसा कुछ भी नहीं था। वह कहती थी -

"पैसा तो मेरे पास नहीं है, पर मैं अपने बच्चों को पढा लिखाकर योग्य बनाऊंगी। बस वे योग्य हुए कि मैंनें सब कुछ पा लिया।"[१] वह बडी धैर्यवान स्त्री थी, वैसे वह अनपढ तो नहीं थी। वह जीस तरह रामचरित मानस पढती थी, उसी तरह वह मराठी समाचार पत्र पढा करती थी। समाज और राजनीति की गतिविधियों में रुचि रखती थी। चरखा चलाना उनके जीवन क्रम का अभिन्न अंग था। वे राष्ट्रवादी नारी थी। उनका जवाहरलाल को अपना पाँचवा बेटा मानना उनकी राष्ट्रनिष्ठा का परिचायक है। अनंत जी की उम्र आठ-नौ महिने की होगी तब चेचक की बिमारी का शिकार हुआ था। आँखोंपर उसका असर होने की संभावना थी। तब अनंत के माताने घबराकर देवी मातासे मनौती माँगी कि -

" बेटे को अंधा होनेसे बचा दो माँ। मैं साष्टांग दण्डवत डाले तुम्हारे दर्शन करूँगी।"[२]

माँ के बारेंमें हृदयस्पर्शी वर्णन अनंत ने अपने "निशागीत" उपन्यास के "माँ की साधना" शिर्षक अध्याय में किया है - वह इसतरह है -

---

१] संपा॰ डॉ॰ के॰ बिहारी भटनागर-शेवडे व्यक्तित्व विचार और कृति, पृ॰ १३॰
२] डॉ॰ सुनिलकुमार लवटे-शेवडे व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ॰ ४॰

"माँ। माँ।। तुम्हारे इस ऋणसे मैं कब मुक्त हो सकूंगा ? मेरे शरीर की चमडी की जूतियाँ भी तुम पहनती तो भी तुम्हारा ऋण न चुक पाता।"[1]

४ दिसम्बर सन १९५१ में दिल का दौरा पडनेसे अनंत की माँ स्वर्ग सिधारी। उस समय उनकी उम्र ४८ वर्ष की थी। शेवडे अपने माँ के बारेमें स्वयं कहते हैं। –

"मैं जो कुछ हूँ, वह सब मेरी माताजी की ही देन है।"[2]

परिवार –

इनका परिवार एक मध्यवित्त परिवार था। इनके पिता नायब तहसीलदार थे। उनकी माता एक धैर्यवान नारी थी। इन्ही का प्रभाव शेवडे पर दिखाई देता हैं। शेवडे की पत्नी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के भाई चिंतामनराव ताम्बे की पौत्री थी। उसका नाम यमुनाताई था। इनका विवाह तय हुऐ ९ वर्ष बाद याने १९३९ में हुआ। उनकी दो बेटीयाँ थी। साधना और अंजली। उनकी पत्नी यमुनाजी एक उत्तर दायी जीवन साथी है। जीवन के हर सुख-दुःख में शरीक होकर उन्होंने अपने आपको अर्धांगिनी सिध्द किया है। वह भी शेवडे की तरह देश भक्त महिला थी। वह मराठी की सुविख्यात कथाकार है। उनका लिखा उपन्यास "जीवनसंगीत" मराठी साहित्यमें बहुचर्चित हुआ। वह एक भारतीय शास्त्रीय संगीत की उपासिका है। यमुनाजी का समुचा

१] अ.गो.शेवडे – "निशागीत" [माँकी साधना] पृ. २७.

२] संपा. डॉ. के. बिहारी भटनागर "शेवडे व्यक्तित्व, विचार, और कृति पृ. १४.

व्यक्तित्व त्याग, संयम, संतोष, शांति से युक्त है। शेवडे के बडे भाई "रामकृष्ण समाज सेवक के नाते प्रसिध्द रहे। रामकृष्ण की पत्नी "इंदुमती" आकाशवाणी नागपुरमें कार्य करती थी। दूसरे भाई वसुदेवराव "नागपूर-टाइम्स" में शेवडे के साथ कार्य करते थे। तो सबसे छोटेभाई रामकृष्ण राव नेफा मिल्स में कार्य करते थे।

शेवडे अपने परिवार के बारे में कहते थे कि -

"मेरा घर एक छोटासा किला है। उसका अन्दरूनी साम्राज्य मजबूत शांति पूर्ण रहे तो दुनिया की कोई ताकद मुझे उखाड नहीं सकती।"[१]

शिक्षा -

अनंत गोपाल शेवडे की प्राइमरी शिक्षा सौंसर गाँव में ही हुअी जहाँ प्रमुखत: मराठी माध्यम था। लेकिन भौगोलिक परिस्थिति के कारण हिंदी का प्रभाव जादह दिखाई देता है। सौंसर में प्राइमरी शिक्षा पुरी होने के बाद उन्हें हाइस्कूल की शिक्षा होशंगाबाद में लेनी पडी जहाँ हिंदी माध्यम प्रमुख था। शेवडे के मन में बचपनसे ही राष्ट्र के प्रति अभिमान जागृत हो चुका था।

सन् १९२८ में जब शेवडे मैट्रिक की परिक्षा दे रहे थे तो उनके पिता की अचानक मृत्यु हुअी। फिर भी मैट्रिक की परिक्षा अच्छे नंबरों से पास हुअे। अंग्रेजीमें अव्वल आने के कारण उन्हे स्वर्ण पदक मिला।

१] संपा• बांकेबिहारी भटनागर -शेवडे व्यक्तित्व, विचार और कृति पृ• ४३•

पिता के मृत्यु के बाद माँ रमाबाई ने अपना परिवार नागपुर लाया। शेवडे ने अपनी महाविद्यालयीन शिक्षा के लिए नागपुर के मॉरिस कॉलेज को चुना। ये जब कॉलेज के तीसरे वर्ष में पढ रहे थे कि सन् १९३० के असहयोग आंदोलन ने जोर पकडा था। इन्ही दिनों शेवडे ने गांधीजी के विचार पढना शुरु किया था। इस आंदोलन से सारा देश गूंज उठा था। अत: शेवडे धीरे-धीरे राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय होते गये। गांधीजी के आव्हान पर कॉलेज की शिक्षा का कुछ दिनों के लिए बहिष्कार किया और राजनीतिक गतिविधियोंमें अपने आपको समर्पित कर दिया। माँ के कारण उन्होंने फिर से कॉलेज की शिक्षा शुरु की और अंग्रेजी और दर्शन शास्त्र जैसे विषय लेकर उन्होंने बी॰ए॰ किया। सन् १९३३-३४ के दौरान विश्वविद्यालय की ओर से गांधी जयंति का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम में शेवडे के लिए सबसे गर्व की बात यह थी कि गांधीजी ने स्वयं अपने हाथ से लिखकर उन्हे एक छोटासा संदेशा भेजा था -

"भाई अनन्त गोपाल शेवडे
कैसा अच्छा हो यदि आप के प्रयत्नों से हिंदी का घर-घर में प्रचार हो जाए ?

आपका
मो॰क॰ गांधी वर्धा"[१]

यह संदेश ही मानो शेवडे के लिए एक आदेश हो गया। अंत में इन्होने अंग्रेजी विषय लेकर सन् १९३५ में नागपुर विश्वविद्यालय की एम॰ए॰ की उपाधि प्राप्त की और आगेचलकर उन्होंने अपने बडे भाई

१] संपा॰ बांकेबिहारी भटनागर-शेवडे व्यक्तित्व, विचार, और कृति पृ॰ ११॰

की सहाय्यतासे १५ अगस्त सन् १९३५ में "इंण्डिपेण्डण्ट" नामक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र की स्थापना की।

स्वधर्म के प्रति श्रध्दा -

अपने धर्म के बारे में वे बडे सतर्क रहते थे। एक बार सन् १९४७-४८ में जब उन्होंने "नागपुर टाईम्स" का कार्य भार संभाला तब उनके कई राजनीतिक मित्रों ने उन्हे असेंब्ली में भेजने का प्रयत्न किया तब उन्होने उसे स्वधर्म के विपरीत समझकर उसको अस्वीकार कर दिया। अपने सिध्दांतों और मान्यताओं के प्रति वह बडे सजग एवं दृढ है। उनका यह सिध्दांत है कि -

"आदमी जो पाता है उससे कही अधिक संस्था को, समाज को, वह लौटा दे तभी वह अपने वेतन का जायज अधिकारी है, वरना यह परिग्रह एवं मिथ्याचार है।"[1]

पत्रकारिता -

सन् १९३५ में एम॰ए॰ होने के बाद उन्होंने सरकारी नौकरी को ठुकराकर अपने जीविका के लिए पत्रकारिता का व्यवसाय चुना। उस समय नागपुरमें अनेक अखबार निकलते थे। लेकिन वे अंग्रेजों के खिलाफ नहीं थे। अत: जन-जागरण के लिए अंग्रेजों के खिलाफ एक आवाज उठाने वाला अखबार निकालने का मन में निश्चय किया और १५ अगस्त सन् १९३५ में अपने बडे भाई के साथ उन्होंने "इण्डिपेण्डण्ट" पत्र की स्थापना की।

१] संपा॰बाकेबिहारी भटनागर-शेषडे व्यक्तित्व, विचार और कृति, पृ॰२२

इस साप्ताहिक पत्र "इण्डिपेण्डण्ट" में नित्य प्रतिदिन अंग्रेजोंकी कडी आलोचना होती रहती थी। उस समय देशभर में "प्रेस अॅक्ट" जारी था। अंग्रेज विरोधी उसकी नीति को देखते हुए प्रेस अॅक्ट की ताहत उस पर जब्ती और जमानत का वॉरंट लगाया गया। "इण्डिपेण्डण्ट" को जारी रखने के लिए दो हजार की जमानत माँगी गयी। "ईण्डिपेण्डण्ट" की आर्थिक स्थिति पहले से ही कमजोर थी। अत: शेवडे ने घर के जेवर बेचे, लोगोंसे चंदा जुटाया। स्व: जमनालाल बजाज से २०० रुपये उधार लाये। जमानत जुटाने में सफलता मिली और जब्ती टल गई।

सन् १९३७ में जमानत वापस मिल गयी और वे पहली गाडी से वर्धा गये और जमनालाल जी की रक्कम वापस कर दी तो वे बोले -

"पहली बार मेरी रक्कम इस तरह वापस हुई है।"[१]

रुपये-पैसे के मामलेमें शेवडे बहुत चोखे थे।

शेवडे एक ओर पत्र चलाने में व्यस्त रहते थे, तो दूसरी ओर वे राजनीतिक गतिविधियोंमें सक्रिय भाग लेते थे। सन् १९४२ में गांधीजी ने "भारत छोडो" का नारा लगाया और उससे प्रोत्साहित होकर उन्होंने अपने आपको उसमें झोंक दिया। शेवडे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक के हेतु बंबई गये थे। कांग्रेस के कार्य कर्ता के रूप में उनका नाम प्रसिध्द था। एक दिन पुलिसने उनके घर को सशस्त्र घेर लिया और उसमें उनको गिरफ्तार किया गया।

शेवडे जेल जाने के बाद "ईण्डिपेण्डण्ट" बंद रहा कुछ महिनोंके

१] संपा• बांकेबिहारी भटनागर-शेवडे-व्यक्तित्व विचार और कृति पृ• १९

अंतराल के बाद वह पूर्ववत प्रकाशित होता रहा। पर सन् १९४४ में प्रेस को अचानक आग लगी पर लोगों की सहाय्यतासे प्रेस बचा।

सन् १९४५ में अन्य राजबंदियों के साथ शेवडे भी जेल से मुक्त हो गयें। और फिर से जमकर काम करना शुरू किया। गांधीजीपर उनका अटूट विश्वास था।

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारत आजाद हुआ। इसी समय शेवडे ने अपने मित्रों की सहाय्यता से "नवसमाज" संस्था की स्थापना की। "नवसमाज" संस्था की स्थापना का उद्देश्य दैनिक पत्र चलाना था। "नवसमाज संस्था व्दारा "नागपुर-टाईम्स" का प्रकाशन शुरू हुआ। "नागपुर-टाईम्स" अंग्रेजी दैनिक पत्र था। आरंभ में सिर्फ ८०० ग्राहक थे। बादमें इस पत्रक के १०,००० अंक निकलने लगे। संस्था एक परिवार बनी थी। सभी लोग एक-दूसरे से भाई चारे से पेश आते थे।

शेवडे भाषा प्रभु इन्सान थे। अंग्रेजी पर उनका प्रभुत्व था। विदर्भमें उनके व्याख्यान सुनने के लिए लोगोंकी भीड होती थी। यही बात समाचार पत्र की भी थी। "नागपुर-टाईम्स" ने उन्हें प्रतिष्ठा दिलायी। उनके व्दार चलायी जानेवाली पत्रिका के खिलाफ राजनीतिज्ञोंनें उनपर फौजदारी दिवानी तथा कंपनी कानून की तहत झूठे दस्तावेज प्रस्तुत करने, जालसाजी, फरेबी जैसे आरोप लगाकर मुकदमें दायर किये। पर अदालत ने उन्हे बरी कर दिया। इसी बीच "नागपुर-टाईम्स" के तत्वावधानमें "नागपुर पत्रिका" का प्रकाशन करने की योजना बनी। यह मराठी दैनिक था। इसका प्रारंभ २ अक्टूबर सन् १९७८ में किया। उनका समग्र व्यक्तित्व पत्रिकारिता के इस पहलूसे अत्यधिक उजागर हुआ था।

अर्थिक स्थिति -

शेवडे की बचपन की अर्थिक स्थिति अच्छी रही क्योंकि उनके पिता एक सरकारी नौकर थे। मध्यवित्त परिवार में पायी जानेवाली सारी सुविधाएँ उन्हे मय्यसर थी। पिता की मृत्यु के बाद उनकी हालत ठिक नहीं थी। पैसे की तंगी तो रोजमर्रा की बात थी। उनके कालेज के दिनों में फिस जुटाने के लिए वे समाचार पत्र बेचा करते थे।

अपने जीवन के लिए उन्हेने पत्रकारिता को स्वीकार कर उन्होंने १५ अगस्त सन् १९३५ में "इंडिपेण्डण्ट" साप्ताहिक अंग्रेजी समाचार पत्र की स्थापना की। उसमें अंग्रेजी सरकार की कडी आलोचना होती थी। पत्रकारिता की चयन एक स्वेच्छा कार्य था। अंग्रेज विरोधी उसकी नीति को देखते हुअे अंग्रेज सरकारने प्रेस अॅक्ट की तहत उसपर जब्ती और जमानत का वॉरंट लगाया। "इंडिपेण्डण्ट" की अर्थिक स्थिति पहलेसे ही कमजोर थी। केवल देश सेवा के उद्देश्य से घाटा उठाकर पत्र को जारी रखने के लिए उन्होंने घर के जेवर बेचे। लोगोंसे चंदा जुटाया। उनके विवाह से पहले उनकी मुलाकत श्रीमती यमुनाजी से हुअी। और ये मुलाकात प्यार बनते-बनते विवाह के शुभ बंधन में बंध गई। लेकिन इसे नौ वर्ष का काल लग गया। क्योंकि उनकी कुछ व्यवहारिक कठिनाईयाँ थी। श्रीमती यमुनाजीके धर में बडे भाई थे। और उनका विवाह होना था। इधर शेवडे अर्थार्जन के अभाव में शादी करना उचित नहीं मानते थे। लेकिन सन १९३९ जून महिने में उनका विवाह संपन्न हुआ। उनकी पत्नी अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में बता देती है -

"व्दार-व्दार पर जाकर समाचार पत्र बाटने का काम भी शेवडेजीने किया हम दोनों ने टयुशने भी की। उन्हें जरुरत से अधिक ठेड

लगती थी। उस पर आ गई थी कोल्डवेव। गर्म कपडे खरिदना आवश्यक हो गया। पर खरिदे कैसे ? उन्हे एक उपाय सूझ पडा। वह डाक खाने से चार आने की कुनैन की गोलियाँ खरीद लाए और उन्हे खा खा कर उन्होंने कपडों की कमी पूरी की।"[१]

गृहस्थी के आरंभिक दिनों में जिन मुसीबतों का सामना किया उसे पढकर हर सहृदय पाठक का हृदय विकल होगा। इसी संदर्भ में श्रीमती यमुनाजीने बतायी हुअी अपनी अर्थिक स्थिति द्रष्टव्य है -

"गरिबी थी। संकट था। पर उस स्थितिमें भी एक मस्ति थी, अलौकिक आनंद था। एक बार कुंकुम की शीशी के लिए दो-ढाई आने भी इनकी जेब में न निकले।"[२]

राजनीतिक स्थिति -

सन् १९३० की काल गाँधीजी व्दारा चहाए जानेवाले असहयोग आँदोलन का काल था। शेवडे पर स्वतंत्रता देश सेवा, स्वदेशीव्रत जैसी बातोंकी धून सवार थी। अत: इससे प्रोत्साहित होकर उन्होंने धीरे-धीरे राजनीतिक गतिविधियोंमें सक्रिय होते गये। गाँधीजी के आव्हान पर उन्होने कालेज की शिक्षा को कुछ दिनो के लिए बहिष्कार कर आजादी के आन्दोलन में सक्रि य हुअे। उन्होने सन १९३३-३४ के दौरान विश्व-विद्यालय की ओर से गाँधी जयंति का आयोजन किया था। गाँधी जयंति एक बहाना था। इसके माध्यम से वे विश्व विद्यालयीन छात्रों को राजकीय

१] संपा• बांकेबिहारी भटनागर-शेवडे व्यक्तित्व, विचार, और कृति, पृ• ३३

२] संपा• बांकेबिहारी भटनागर-शेवडे व्यक्तित्व, विचार, और कृति, पृ• ३४

गतिविधियों से परिचित करना चाहते थे। गांधी जयंति जैसे समारोह का आयोजन कर उन्होने काफी सूझ-बूझ का परिचय दिया था। १५ अगस्त सन् १९३५ में उन्होंने "ईण्डिपेण्डण्ट" नामक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र की स्थापना की और उसके माध्यम से जन-जागृति, देशसेवा करने लगे। शेवडेजी एक ओर पत्र चलाने में जद्दो-जहद करते थे, उधर दूसरी ओर कांग्रेस के कार्य कर्ता के रूपमें गतिविधियोंमें उलझे रहते थे। सन १९४२ में गांधीजी ने भारत छोडो का नारा बुलंद करते ही राजनीतिक सरगर्मियाँ बढी। इन दिनों शेवडे "अखिल भारतीय कांग्रेस समिति" की बैठक के हेतु बंबई गये थे। कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में उनका बोल-बाला था। पुलिस सतर्क थी। पुलिस से पिण्ड छुडाने के लिए शेवडे भूमिगत रहते थें। पुलिस ने नजर रखकर उनके घर पर छापा मारा। सशस्त्र पुलिस ने उन्हें गिरफ्त कर हिरासत में किया।

सन् १९४५ में अन्य राजबंदियों के साथ शेवडे भी जेल से मुक्त हो गये। उन्होंने फिर से जमकर अपना काम शुरु किया। सन् १९२१, ३०,४२ के सारे आन्दोलनों के विफल होते देखकर लोग निराश थे। पर शेवडे का विश्वास था कि, गांधीजीके बताये अहिंसा सत्य शांति जैसे उपायों से ही भारत स्वतंत्र होगा। और हुआ भी वही। १५ अगस्त १९४७ को देश आजाद हुआ।

साहित्य निर्मिति -

शेवडे बडे तेज बुद्धि के आदमी थे। नित्य पठन-पाठन की आदत ने उन्हें लेखन की प्रेरणा दी। सन् १९२५ में वे मिडील स्कूल में पढ रहे थे, तो उन्होंने "सातपुडा पहाड" की उपत्य का में देनवा नदी की घाटीमें बसे परिवेश का मनोहारी वर्णन करनेवाला लेख लिखा और

वह लेख इलाहाबाद से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका "बालसखा" को भेजा। सौभाग्यसे वह तुरंत प्रकाशित हुआ। अपने पहले लेख के मुद्रित देखकर वह आनंद विभोर हो उठे, और अपना लेख सबको दिखाने लगे।

इस प्रकाशन से वे प्रोत्साहित हुअे और नित्य लिखने लगे। इसी समय बच्चों की अन्य पत्रिका "शिशु" में भी उनका लेखन प्रकाशित हुआ। सन् १९२८ में उनका परिचय सुविख्यात कवि पं• माखनलाल चतुर्वेदी से हुआ। उनके प्रोत्साहन और निकट संपर्क से उनका साहित्यिक आश्वस्त हुआ। उनकी प्रेरणासे उन्होंने "कर्मवीर" में लिखना आरंम्भ किया। शोवडे मोपासा, चेखव, प्रेमचंद, खाडिकर, जैसे कथाकारों की अंग्रेजी, हिंदी, मराठी में लिखी जो रचना हाथ आती उन्हे वे पढकरही छोडते थे। इन्होने इनसे प्रभावित होकर अपने अनुभवोंको स्वर दिलाने के हेतू छोटी-मोटी कथाएँ लिखी। "प्रेस रिपोर्टर", "साईकिल नंबर", "बलिदान", जैसी कहानियाँ इन्ही दिनों की उपज है। ये कहानियाँ "सुधा", माधुरी" "हंस", "विश्वामित्र", "विशाल भारत", जैसे पत्रिकाओंमें प्रकाशित हुअी। "संदुक का मालिक" उस समय की बहुचर्चित कहानी है। जो प्रेमचंद व्दारा संम्पादित पत्रिका "हंस" में प्रकाशित हुअी थी। प्रेमचंद ने कहानी के लिए ५ रूपये का पुरस्कार दिया था। और लिखा था।

"लिखने का तरिका अच्छा है, लिखते जाईएँ।"[१]

सन् १९30-31 में लिखा हुआ उनका पहला उपन्यास "ईसाई बाला" सन् १९३२ में इलाहाबाद के चांद प्रेस से प्रकाशित हुआ।

१] संपा• बाकेबिहारी भटनागर-शोवडे व्यक्तित्व विचार और कृति, पृ• ५७

राजनीतिक उथल-पुथल का लेखा जोखा होने वाला यह उपन्यास सन् १९३३ में "पी•सी•बरेरा लिटररी अकैडमी" व्दारा पुरस्कृत हुआ। प्रथम प्रकाशित रचना पर पुरस्कार पाने के बाद हिंदी साहित्यमें लेखक के रूपमें उनकी चर्चा होने लगी। "ईसाई बाला" के प्रकाशन के बाद उनके लेखन कार्य में दस वर्ष का खंड दिखाई देता है। लेकिन बाद में उन्हे जब सन् १९४२ के "भारत छोडो" आन्दोलन के सिलसिलेमें गिरफ्तार किया गया और जेल जाना पडा। जेल में उन्होने पुन्हा अपना हिंदी का लेखन कार्य शुरु किया और उस जेल के तीन वर्षों के अवधि में उन्होने "पूर्णिमा", "मृगजल", तथा "निशागीत", उपन्यासों की रचना की। इसकालमें लिखी गयी कहानीयोंमें उल्लेखनीय है। - "डायरी के पन्ने", "तीन कंकड", "प्रतिमा", और "संतरोंकी डाली", निबंधोंमें उल्लेखनीय है - "तिसरी भूख", "जीवन की किताब", तथा "अपना-अपना चश्मा" जैसे लेखन का कार्य हुआ।

स्वतंत्रता के बाद उन्होंने अपने जेलमें लिखे गये उपन्यास "निशागीत" "मृगजल", पूर्णिमा" क्रमश: १९४८, १९४९, १९५० में प्रकाशित हुए। "मृगजल" उपन्यास को मध्यप्रदेश सरकार का १९५५ में पुरस्कार मिला और इसी वर्ष उनकी दो रचनाएँ "ज्वालामुखी"उपन्यास और "तीसरी भूख" निबन्धसंग्रह प्रकाशित हुअे। ये दोनों रचनाएँ उत्तर प्रदेश व्दारा पुरस्कृत हुअी। "ज्वालामुखी" में सन १९४२ की अगस्त क्रांति का आँखे देखा हाल चित्रित है और "तिसरी भूख" उनके १२ ललित निबंधों का संकलन है।

सन १९५८ में उनका "मंगला" उपन्यास आया। अंधे गायक की कथा होने वाला यह उपन्यास "नेत्रहिनों की गीता" के रूपमें बहुचर्चित हुआ। ये उपन्यास ब्रियल लिपि में भी प्रकाशित हुआ।

स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक पतन एवं परिवर्तन की गाथा के रूप में उनका "भग्नमंदिर" [१९६०] उल्लेखनीय उपन्यास माना जायगा। उत्तर प्रदेश सरकारने इसे सन् १९६१ में पुरस्कृत किया। इसी वर्ष उनका "प्रदक्षिणा" नामक लघु उपन्यास "अधूरा सपना" शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

"संगम" [१९६२] और "संतरों की डाली" ये कहानी संग्रह उनके प्रकाशित हुए। "संगम" कहानी संग्रह अनन्त गोपाल शेवडे और उनकी पत्नी यमुनाजी शेवडे की लिखी हुई कहानियोंका संग्रह है। एक दृष्टिसे यह संकलन मराठी और हिंदीका संगम है।

उनका नौवा उपन्यास सन् १९६५ में "इंद्रधनुष" शीर्षक से सामने आया। वह सतीत्व की मानवताकी परिभाषा करनेवाला उपन्यास है। सन् १९६९ में इसे भारत सरकार ने पुरस्कार देकर गौरवान्वित किया। सन् १९७२ के लगभग उनका दसवाँ उपन्यास "कोराकागज" प्रकाशित हुआजो सन् १९७३ में उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कृत हुआ। उनका अंतिम उपन्यास "अमृतकुम्भ" है। शेवडे के इस उपन्यास को उनकी सर्व श्रेष्ठ कृतिमाना जायेगा। सत्य काम और पालीन की यह कथा पूर्व पश्चिम संस्कृति का समन्वय है।

उनके अंग्रेजी उपन्यास है "द व्हॉल्केनो" [१९६६] "डस्क बिफोर डान" स्टार्म अँन्ड दी रेनबो" "ए डार्क हंगर" "सायलेंट सांग" -

बहुभाषी साहित्यकार के रूपमें शेवडे ने उपन्यास, कहानी, निबंध रेखाचित्र, संस्मरण, लेखादि लिखकर अपने आपको बहुमुखी साहित्यकार सिध्द किया है।

मृत्यु -

पत्रकारिता के कार्य के लिए जब शेवडे कलकत्ता गये वहीं हृदय गति रुक जाने से काल वश हुये। वे अडसठ वर्ष के थे। उनके निधन से एक कर्मठ व्यक्तित्व पंच महाभूतोंमें लीन हुआ। केवल महाराष्ट्र से ही नहीं बल्कि भारत के अनेक नेताओंने शोक संदेशो की बरसात की। महाराष्ट्र के पत्रकार, साहित्यकार, समाजसेवक, राजनीतिज्ञ, नारियाँ, तथा महात्माओंने अपनी सहानुभुतियाँ तथा संवेदनाएँ व्यक्त की थी।

"तत्कालिन मुख्यमंत्री श्री• शरद पवार, पंतप्रधान श्री• मोरारजी भाई देसाई, श्री• किरणसिंह, श्री• जार्ज फर्नांडिस, आदि तत्कालिन राजकीय नेताओंने अपना दु:ख प्रकट किया। श्रीमती इंदिरा गांधीजीने, एक प्रामाणिक बुध्दिमान तथा प्रतिष्ठ पत्रकार और सरकारी दोस्त, और अपने कार्य के प्रति सहानुभूति रखनेवाले व्यक्ति के नाते याद किया। इनके अतिरिक्त श्री• मोहन धारियाँ, श्री• पी• सी• शुक्ला, श्री• रामानंद सागर, श्री• वसंत साठे, श्री• नरेंद्र तिडके, जैसे हजारों नेताओं ने तथा समाज सेवकों ने भी अपना दु:ख प्रकट किया। इसी समय भारत पर्यटन के लिए आये हुये मिस्टर रोजर व्हीगलयर, सम्पादक श्री रीव्हर्स कमर्शियल मीच, अमरीका ने अत्यंत भाव पूर्ण श्रध्दांजली अर्पित की।"[१]

शेवडे का समग्र जीवन नित्य संघर्ष में गुजरा। उसमें असीम देश भक्ति थी। पत्रकारिता, साहित्य, राजनीति समाजसेवा, जैसे सभी क्षेत्रोंमें वे अपने बनेबनाये आदर्शों पर दृढ रहे इसी वजह से उनका जीवन

१] डॉ• शंकर नागेश गुंजिकर, अनंत गोपाल शेवडे और उनका साहित्य पृ• १६, १७•

दीपस्तंभ के समान पथदर्शक सिध्द होता है। हिंदी तर भाषी होकर भी शेवडे हिंदी के व्यापक प्रचार, प्रसार एवं विकास के लिए जुझते रहे। उनके देहवसान से हिंदी साहित्य भाषा एवं संस्कृतिकी ऐसी हानी हुई है, जिसकी पूर्ति करना असम्भव है। उनका जीवन हर भारतीय के लिए संस्मरणीय है।